मानव शरीर-रचना

प्रथम भाग

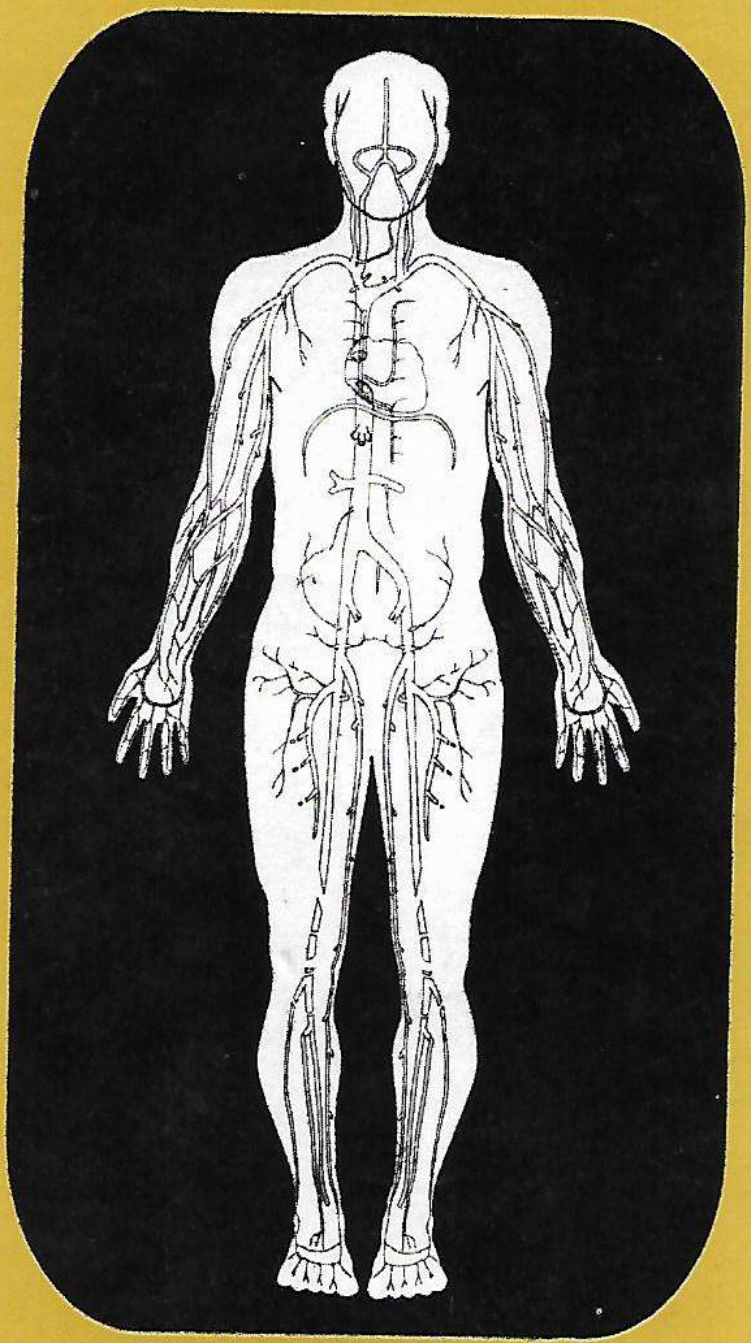

डॉ० मुकुन्दस्वरूप वर्मा

मानव शरीर-रचना

प्रथम भाग

लेखक

डॉ० मुकुन्दस्वरूप वर्मा

बी० एस-सी०, एम०बी०बी०एस०

भूतपूर्व प्रधानाचार्य, आयुर्विज्ञान महाविद्यालय,

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

वाराणसी (उ०प्र०)

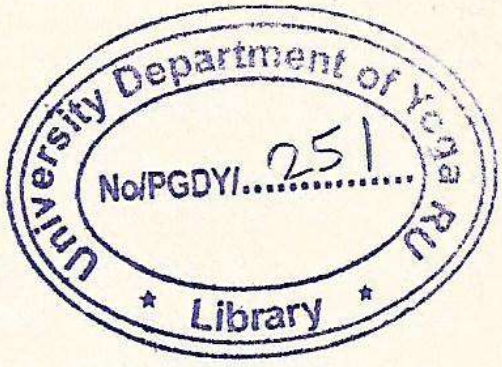

मोतीलाल बनारसीदास

दिल्ली, मुम्बई, चेन्नई, कोलकाता, बंगलौर,

वाराणसी, पुणे, पटना

विषयानुक्रमणिका

भूमिका

I ऊतक विज्ञान

जान्तवकोशिका 1
कोशिकाओं की उत्पत्ति 7
शरीर की सामान्य रचना 11
शरीर के ऊतक 11
उपकला 11
संयोजी ऊतक 17
दृढ़ ऊतक 24
उपास्थि 24
अस्थि 27
मांसपेशी ऊतक 35
तंत्रिका तंत्र 42
शरीर के तरल 47
रुधिर 47
लिम्फ 53
ऊतकद्रव 53
अस्थिमज्जा 54
जालक अन्तःकला तन्त्र 57

II भ्रूणविज्ञान

विषय प्रवेश 59
डिम्ब 62
डिम्ब के आवरण 64
डिम्ब का परिपाक 65
शुक्राणु 67
डिंब का निषेचन 70
निषेचित डिम्ब का विखंडन 71
भ्रूण क्षेत्र का विभेदन 78
मध्यजन स्तर का खंडीभवन और अन्तर्भ्रूणा सीलोम का बनना 81
भ्रूण का बनना 85
भ्रूण का पोषण 88
भ्रूण की कलायें और अपरा 91
संयोजी वृन्त 92
निषेचित डिम्ब का आरोपण 93
गर्भाशय में परिवर्त का चक्र 95
पतनिका 98
जरायु 99
अस्थि कंकाल तन्त्र का परिवर्धन 106
गिल उपकरण 112
आनन, नासिका और तालु का परिवर्धन 114
चालक उपकरणों का परिवर्धन 124
त्वचा और उसके अनुबन्ध 129
तन्त्रिका तन्त्र और उसका परिवर्धन 131
मेरुरज्जु का परिवर्धन 131
मेरुतन्त्रिकाओं का परिवर्धन 135
मस्तिष्क का परिवर्धन 136
पश्चमस्तिष्क 138
अग्रमस्तिष्क 149
कपाली तन्त्रिकाएँ 158
स्वायत्त तन्त्र 159
क्रोमेफिन अंग 160
अधिवृक्क ग्रन्थियाँ 161
ज्ञानेन्द्रियों का परिवर्धन 162
नासिका 162
नेत्र 162
कर्ण 166
वाहिकातन्त्र का परिवर्धन 171
हृदय का परिवर्धन 172
धमनियों का परिवर्धन 186
शिराओं का परिवर्धन 197
लसीका वाहिका तन्त्र 206
पाचन और श्वसन उपकरणों का परिवर्धन 207
पाचक नलिका का और परिवर्धन 216
पर्युदर्या 223
श्वसन अंग 228
शरीर की गुहाओं का परिवर्धन 230
मूत्र-जनन अंगों का परिवर्धन 234
भ्रूण की वृद्धि की भिन्न-भिन्न अवस्थाओं पर उसका रूप और लम्बाई-चौड़ाई 253

III अस्थि-प्रकरण

भूमिका 259
पृष्ठवंश, मेरुदण्ड 263
कशेरुका की सामान्य रचना तथा उसके विशिष्ट अभिलक्षण 264
विशेष कशेरुकाएँ 266
ग्रैव कशेरुकाएँ 266
उर: कशेरुका 272
कटिप्रदेश की कशेरुका 276
त्रिकास्थि 279
अनुत्रिकास्थि 284
कशेरुकाओं का अस्थिविकास 285
समस्त पृष्ठवंश 287
उरोऽस्थि 290
पर्शुकायें 294
पर्शुक उपास्थियाँ 300
वक्ष 301
करोटि 303
करोटि ऊपर से 308
करोटि का अग्र 310
नेत्रगुहा 313
करोटि का पश्च ओर का दृश्य 316
करोटि का पार्श्व ओर का दृश्य 317
करोटि का आधार 322
करोटि का अभ्यन्तर 331
करोटि शीर्ष का आभ्यन्तर 332
अग्र कपाल खात 333
मध्य कपाल खात 334
पश्च कपाल खात 338
नासागुहा 340
अधो हन्वस्थि 344
कंठिकास्थि 350
पश्चकपालास्थि 352
जतूकास्थि 357
शंखास्थि 364
पार्श्विकास्थि 373
ललाटास्थि 376
एथमाइड झर्झरिका 379
अधोनासा शुक्तिका 384
अश्रु अस्थि 385
नासास्थियाँ 386
सीरिका 387
आनन की अस्थियां 388
ऊर्ध्वहनु 388
तालु अस्थि 396
गंडास्थि 399
आयु के अनुसार करोटि की अस्थियों में परिवर्तन 401
पुरुष और स्त्रियों की करोटियों में अन्तर 405
ऊर्ध्व अंग 406
ऊर्ध्व अंग की अस्थियाँ 407
अंसफलक 407
जत्रुक 413
प्रगंडिका 415
अन्त: प्रकोष्ठिका अलना 423
बहि: प्रकोष्ठिका 430
हाथ की अस्थियाँ 433
मणिबंध 434
करभास्थियाँ 441
हाथों की अंगुल्यस्थियाँ 445
अध: अंग की अस्थियाँ 448
नितम्बास्थि 448
श्रोणि 463
ऊर्विका 467
जानुका 479
अन्तर्जंघिका टिबिया 480
बहिर्जंघिका 487
पांव की अस्थियाँ 491
पदकूर्च 491
प्रपदास्थियाँ 503
पाँव की अंगुल्यस्थियाँ 508
मानव शरीर रचना सम्बन्धी पर्यायवाची शब्दावली 511

मानव शरीर-रचना (प्रथम भाग)

डॉ० मुकुन्दस्वरूप वर्मा

प्रस्तुत पुस्तक के प्रमुख तीन प्रकरण हैं— १. ऊतकविज्ञान, २. भ्रूणविज्ञान और ३. अस्थि-प्रकरण।

१. ऊतकविज्ञान—इस प्रकरण में कोशिकाओं की उत्पत्ति, शरीर की सामान्य रचना, शरीर के अनेक उपकला आदि ऊतक, शरीर के तरल रुधिर आदि पदार्थ तथा जालक अन्त:कलातन्त्र का विवेचनात्मक विशद् वर्णन है।

२. भ्रूणविज्ञान—इस प्रकरण में डिम्ब, शुक्राणु, भ्रूण की रचना, पोषण, अस्थि, मेरु, मस्तिष्क, ज्ञानेन्द्रियों एवं शिराओं का परिवर्धन, हृदय, धमनी, शिरा, लसीका वासिका तन्त्र, शरीर की गुहाओं का परिवर्धन तथा भ्रूण की वृद्धि की भिन्न-भिन्न अवस्थाओं की निदर्शन आदि अनेक विषयों का विस्तार से दिया गया है।

३. अस्थि-प्रकरण—इसमें मेरुदंड या कशेरुका की सामान्य रचना, उरोस्थिपर्शुकाएँ, उपास्थियाँ, वक्ष, करोटि (कपाल की विभिन्न दशाएँ), ललाटास्थि, पुरुष-स्त्री करोटियों में अन्तर, हाथ-पाँव, अध:अंग की अन्य अस्थियों के भेद-प्रभेद का विस्तृत विवेचन है।

इस ग्रंथ की विशेषता यह है कि शरीर के रचना-संबंधी प्रत्येक विषय का चित्रों द्वारा ऐसा समझाने का प्रयत्न किया गया है जिससे अंगों, उपांगों, अस्थियों, भ्रूण-अवस्थाओं का आवश्यक ज्ञान शीघ्र ही प्राप्त हो सके।

अन्त में रचना-संबंधी हिन्दी शब्दों के अंग्रेजी पर्याय दिए गए हैं जो आयुर्वेदिक और मेडिकल दोनों अध्येताओं के लिए उपयोगी हैं।

आधुनिक चिकित्साशास्त्र

श्री धर्मदत्त वैद्य

चिकित्सा का अलग ग्रन्थ हो और निदान का अलग-जैसा कि बहुत पाया जाता है—यह एक कष्टसाध्य कार्य है: क्योंकि पहले एक जगह रोगों के कारण, लक्षण, उसके भेद-प्रभेदों की जानकारी करना, फिर दूसरी जगह उन रोगों के कारणों, लक्षणों के अनुसार चिकित्सा करना एक दीर्घ और परिश्रम का कार्य है।

प्रस्तुत पुस्तक में रोगों के निदान-कारण, लक्षण और उनके भेद-प्रभेद बताकर साथ ही उनकी चिकित्सा का उपाय दिया गया है—इतना ही नहीं किसी भी रोग के सूक्ष्म-से-सूक्ष्म लक्षणों पर प्रकाश डालने के बाद तदनुसार ही औषधियों का निर्देश किया गया है। इस नाते यह नवीन पद्धति पर निर्मित एक महान् ग्रन्थ है।

कहाँ पेटेंट औषधियाँ उपयुक्त होती हैं और कहाँ नवीन औषधियाँ लाभ पहुँचाती है? स्त्रियों, पुरुषों एवं बच्चों में होनेवाले विभिन्न प्रकार के रोगों में विभिन्न प्रकार की कौन-सी औषधियाँ रामबाण सिद्ध होती हैं—यह सब अनुभवी लेखक ने पुस्तक में विस्तारपूर्वक दिया है।

इस ग्रंथ की यह विशेषता है कि इसमें आधुनिक कायचिकित्सा के वर्णन के साथ-साथ आयुर्वेदिक काय-चिकित्सा का भी उल्लेख किया गया है। ये दोनों चिकित्सा-पद्धतियाँ एक दूसरे की सहायक होकर हमें पूर्णता (चिकित्सा में सफलता) की ओर ले जाती हैं और यही चिकित्सा का लक्ष्य है।

मोतीलाल बनारसीदास

दिल्ली • मुम्बई • चेन्नई • कोलकाता
बंगलौर • वाराणसी • पुणे • पटना

E-mail- mlbd@vsnl.com
Website: www.mlbd.com

ISBN 81-208-2267-6

9 788120 822672

मूल्य: रु० 350 (सजिल्द) ISBN: 81-208-2266-8

मूल्य: रु० 250 कोड : 22676